रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67 / 2015–2017
चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र
पाक्षिक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

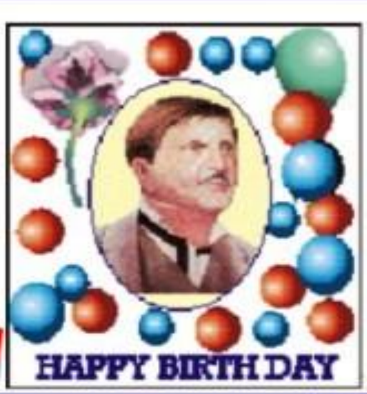

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –2 ● कानपुर 16 से 31 जनवरी 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

एकजुटता और कार्य से करें विकास – उप निदेशक

इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज बहुत अच्छी स्थिति में है इसके विकास के लिए कार्य भी किये जा रहे हैं लेकिन अच्छे परिणाम पाने के लिए सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथों को एकजुटता के साथ सार्थक प्रयास करने चाहिये तभी विकास सम्भव है यह विचार प्रदेश का सर्वोच्च सम्मान यशभारती प्राप्त डा0 सैयद मो0 हस्सान उप निदेशक केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा जय शंकर प्रसाद हॉल, राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, लखनऊ में आयोजित अधिकार दिवस समारोह में व्यक्त किये।

डा0 हस्सान ने कहा कि यहाँ पर आकर और आप लोगों के विचार सुनकर मुझे प्रसन्नता हो रही है इलेक्ट्रो होम्योपैथी इतनी सम्पन्न है यह जानकर आश्चर्य तो हुआ ! लेकिन खुशी भी हो रही है कि बिना मान्यता के अपने संसाधनों द्वारा आप लोगों द्वारा जो जनता की सेवा की जा रही है उसकी जितनी सराहना की जाये वह कम है, सरकारें आसानी से नहीं सुनती हैं उनको अपनी बात बतानी पड़ती है, डा0 हस्सान ने राय दी कि पांच छः सांसदों की एक कमेटी बनाइये, उनसे मिलिये, श्री राजनाथ जी आपके सांसद हैं देश के गृहमंत्री हैं अच्छे व्यक्ति हैं सबकी सुनते हैं उनसे मिलिये अपनी बात बताइये जहाँ मेरी आवश्यकता हो मैं तन मन और धन से आपका साथ दूँगा। चिकित्सा विभाग के जो अधिकारी हैं उनसे मिलकर अपनी बात रखी जाये तो सफलता न मिले यह सम्भव नहीं है परन्तु सफलता के लिए वास्तविक कार्य हों, चिकित्सकों को चाहिये कि अधिक से अधिक लोगों तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को पहुँचायें और जो संस्था प्रमुख हैं वह भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए और कार्य करें।

ज्ञातव्य हो कि 4 जनवरी 2012 को उत्तर प्रदेश शासन द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एक शासनादेश जारी किया गया था इस शासनादेश के आने के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को चिकित्सा व्यवसाय करने, शिक्षा प्राप्त करने व अनुसंधान के सारे अधिकार प्राप्त हो गये हैं। तब से इलेक्ट्रो होम्योपैथ 4 जनवरी को अधिकार दिवस के रूप में मनाते हैं अब 5 साल पूरे हो चुके हैं और यह पाँचवां कार्यक्रम बोर्ड द्वारा लखनऊ में आयोजित किया गया है इस कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने कहा कि जिन प्रयासों से आपको यह अधिकार मिला है इसको सुरक्षित रखना आपका दायित्व है, आप कार्य करें यदि कार्य की राह में कोई परेशानी आये तो हम तक पहुँचायें हम प्रयास करेंगे कि आपकी हर समस्या का समाधान हो। डा0 इदरीसी ने आगे कहा कि कार्य करने का मार्ग प्रशस्त है सिर्फ आपको पूरे अधिकारों के साथ कार्य करने की आवश्यकता है सरकार निश्चित रूप से आपके लिए उचित कदम उठायेगी।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मैटी को याद करके हुआ सर्वप्रथम अमेठी फतेहपुर से पधारे डा0 दयानन्द सागर ने मैटी की याद में वन्दना की, तत्पश्चात लखीमपुर से पधारे डा0 आर0 के0 शर्मा ने कहा कि परिस्थितियां बड़ी तेजी से बदल रही हैं हम विकास की तरफ बढ़ रहे हैं आम जन में भी लोगों के प्रति इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विश्वास बढ़ रहा है इस तरह से हम यह कह सकते हैं कि हम शीघ्र ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता पा लेंगे। जौनपुर से पधारे डा0 प्रमोद कुमार मौर्या ने कहा कि पूरे पूर्वांचल में इलेक्ट्रो होम्योपैथी फिर बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही है, जौनपुर गाजीपुर, बनारस और हमारे आस पास के क्षेत्र के चिकित्सक पूरी तन्मयता के साथ प्रैक्टिस कर रहे हैं, उनकी प्रैक्टिस पर कोई रूकावट नहीं है, हमारे जनपद में पंजीयन की भी कोई समस्या नहीं है 110 चिकित्सकों ने मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन का आवेदन दे रखा है और जो नये चिकित्सक आ रहे हैं उनका भी पंजीयन करवाया जा रहा है, बोर्ड जिस भी आन्दोलन में हमसे चलने को कहेगा मैं स्वयं अपने चिकित्सकों के साथ हर समय तैयार रहूँगा।

इसी क्रम में लखनऊ के चिकित्सक डा0 परिखान राम धूलिया ने सम्बोधित करते हुए चिन्ता व्यक्त की कि कुछ छद्मवेशी औषधि निर्माता पैदा हो गये हैं जो तरह–तरह की दवाईयां बनाकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नाम पर बेच रहे हैं उनके ऊपर लगाम लगनी चाहिये अन्यथा यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एक न एक दिन ज़रूर घातक सिद्ध होगा। बहराइच से पधारे डा0 भूपराज श्रीवास्तव ने कहा कि अब इलेक्ट्रो होम्योपैथ पहचान के मोहताज नहीं हैं काम बोलता है और काम के बल पर ही हम आगे बढ़ रहे हैं मंच से बोलते हुए मुख्यअतिथि डा0 बी0 डी0 जोशी पूर्व जिला होम्योपैथिक अधिकारी लखनऊ ने पुराने दिनों की याद करते हुए कहा कि वह भी क्या दिन थे जब लखनऊ कालेज में 400 की संख्या हुआ करती थी और हमारा छात्र इतना अनुशासित होता था कि वह अलग से ही दिखता था हमने लखनऊ, सीतापुर, लखीमपुर, हरदोई और बुन्देलखण्ड में निःशुल्क इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा शिविर आयोजित किये हैं रोगियों को देखा गया है एवं लाभ भी पहुँचाया गया परन्तु आज यह काम खत्म सा हो गया है इसलिए हम पिछड़ रहे हैं इस काम को फिर से शुरू करना चाहिये, डा0 जोशी ने कहा कि समय के साथ–साथ पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन होना चाहिये और बोर्ड का यह दायित्व है कि वह कालेजों पर दबाव डाले कि अच्छे और योग्य चिकित्सकों के माध्यम से डिस्पेंसरियों का संचालन करें जिससे जनता से सीधे सम्पर्क स्थापित हो सके साथ–साथ शिक्षा की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होना चाहिये।

अवध इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीटयूट के प्राचार्य डा0 आर0 के0 कपूर ने कहा कि डा0 शब्द के प्रयोग का बोर्ड अधिकार दे और इन्सटीटयूट के स्थान पर कालेज शब्द का प्रयोग किया जाये, ऐसा करने से छात्र संख्या पर प्रभाव पड़ेगा। इसी अवसर पर 4 चिकित्सक जो पंजीकरण कराकर चिकित्सकीय जीवन पर उतर रहे हैं उन्हें अतिथियों द्वारा पंजीयन प्रमाण पत्र दिये गये रायबरेली के इन चारों चिकित्सकों को उज्जवल भविष्य की कामना की गयी। कार्यक्रम को डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने संचालित किया व धन्यवाद डा0 जे0के0चौरसिया ने किया कार्यक्रम का संयोजन मो0 खालिद ने किया। कार्यक्रम में डा0 अतीक अहमद,डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा,डा0 एम0 ए0 इदरीसी, डा0पी0 एन0 कुशवाहा,डा0 प्रमोद गुप्ता,डा0 राम औतार कुशवाहा,डा0 राम अरज राजभर ,डा0 प्रमोद सिंह आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे श्री नसीम इदरीसी का विशिष्ट योगदान था। सर्दीले और बिगड़े मौसम में चिकित्सकों की उपस्थिति कार्यक्रम की सफलता की कहानी स्वयं कह रही थी स्वल्पाहार के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

अधिकार दिवस के अवसर पर मंच से सम्बोधित करते हुये डा0 सैयद मो0 हस्सान उप निदेशक केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद छाया गज़ट

औषधि निमार्ण की बहुलता ख़तरे की घण्टी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी अधिकार प्राप्त चिकित्सा पद्धति है परन्तु अभी भी इसके सार्थक प्रचार व प्रसार की आवश्यकता है यह जिम्मेदारी हम लोगों के साथ–साथ चिकित्सकों को भी निभानी होगी यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आविष्कारक डा0 काउण्ट सीज़र मैटी के 208 वें जन्मोत्सव समारोह में बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बोर्ड के चेयरमैन डा0 एम0एच0इदरीसी ने व्यक्त किये। कार्यक्रम का प्रारम्भ डा0 मैटी के चित्र पर माल्यार्पण के साथ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ तत्पश्चात मंचासीन अतिथियों को पुष्पगुच्छ देकर उनका सम्मान किया गया बोर्ड के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने डा0 मैटी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए आज की स्थिति पर अपने विचार दिये उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्रासंगिकता बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि अधिक से अधिक संख्या में चिकित्सक इसी विधा से चिकित्सा व्यवसाय कर जनता को स्वास्थ्य लाभ दें, मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए डा0 इदरीसी ने कहा कि आज प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति काफी सुदृढ़ है जिन लोगों के मध्य अभी भी जागरूकता का अभाव है उन्हें हम पुनः जागरूक करने का प्रयास करेंगे। और चिकित्सकों से अपील भी करेंगे कि प्राप्त अधिकारिता की वह उपेक्षा न करें शासकीय उपेक्षा को समाप्त कराने के लिए हम प्रयासशील हैं।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बोर्ड के प्रवक्ता डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने कहा कि कोई भी चीज आसानी से प्राप्त नहीं होती है उसके लिए सतत प्रयास करने होते हैं और यही प्रयास रंग लाते हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी दिन प्रतिदिन विकसित हो रही है परन्तु इसका वास्तविक विकास हम तभी मानेंगे जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए सामान्य जन से लेकर हर वर्ग का व्यक्ति इस चिकित्सा पद्धति को स्वीकारने लगे, संकेत अच्छे आ रहे हैं परिणाम भी अच्छे आयेंगे। कार्यक्रम में अपने विचार देते हुए डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि अब परिणामों की प्रतीक्षा नहीं करनी है परिणाम आते जा रहे हैं और यह परिणाम हम सबको उज्ज्वल भविष्य का संकेत भी दे रहे हैं जो लोग शासकीय सेवा की आस लगाये हैं उनकी भी आशा पूरी होगी, जो आज कल्पना लग रही है कल वह वास्तविक रूप में दिखेगी। पास्टर विक्टर खोजी ने जन्मदिन का केक कटवाया जिसे श्रीमती शाहीना इदरीसी व डा0 इदरीसी ने उपस्थित जनसमूह के बीच काटा फिर प्रार्थना हुई। इस कार्यक्रम में डा0 राजेन्द्र प्रसाद, डा0 प्रमोद सिंह, डा0 अनिल शर्मा, डा0मारिया इदरीसी, मो0 वसीम, मो0 नसीम इदरीसी, डा0 वाई0आई0 खान, डा0 बी0 डी0 दीक्षित आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

1– इन्दौर में ऊपर केक काटते पास्टर विक्टर खोजी के दायें श्रीमती शाहीना इदरीसी एवं बायें डा0 एम0एच0 इदरीसी बेबी फिजला के साथ

2–पास्टर विक्टर खोजी बेबी फिलजा को केक खिलाते हुये उनकी मदद कर रहे डा0 एम0एच0इदरीसी

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आविष्कारक डा0 काउण्ट मैटी अपने 208 वें जन्म दिवस पर केक के साथ। छाया गज़ट

चेतना देता पखवारा

हर 15 दिन के बाद एक पखवारा खत्म होता है और नया पक्ष शुरू होता है यह क्रम अनवरत रूप से चलता रहता है और चलता रहेगा। परन्तु हर नया पखवारा हमें यह तो ऊर्जा देता है या फिर स्थिरता । नया वर्ष नये संकल्पों के साथ शुरू होता है और यह कामना की जाती है कि जो संकल्प हमने लिये हैं उनकी पूर्ति भी कर दें कुछ संकल्प व्यक्तिगत होते हैं और कुछ सामूहिक, इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज से जुड़ी हुई चिकित्सा विधा है इसका हर कदम समाज को सीधे तौर पर प्रभावित करता है इसलिए जो भी निर्णय या संकल्प लिये जाते हैं उनके पीछे यह भावना छिपी रहती है कि जो कुछ भी वह सर्वसमाज के लिए हो। नया वर्ष का पहला पखवारा इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिए काफी महत्व रखता है क्योंकि इस एक पक्ष में ऐसे तीन–तीन अवसर आते हैं जब हम चेतना से भरकर भरपूर

ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लेते हैं प्रथम अवसर 31 दिसम्बर की रात्रि व 1 जनवरी का प्रथम दिन, इस दिन को हम सभी उत्साह से मनाते हैं गुज़रे दिनों की तकलीफों को भूलकर आने वाले दिनों के मंगलमयी होने की कामना करते हैं और यह प्रयास भी करते हैं कि जो कुछ भी कामना हमने की है वह फलीभूत हो, इसके ठीक तीन दिन बाद 4 जनवरी का दिन आता है यह दिन भी हम इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन वर्षों से हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए शासनादेश हो जाये, हेतु संघर्ष करते रहे हैं वह फलीभूत हुआ था अर्थात 4 जनवरी 2012 को उत्तर प्रदेश के चिकित्सा अनुभाग – 6 द्वारा प्रदेश में एक मात्र विधि सम्मत ढंग से स्थापित इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्था बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के प्रयासों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान अनवरत रूप से चलता रहे का अधिकार प्रदान करते हुए शासनादेश जारी किया था।

निश्चित तौर पर यह हमारी वर्षों की मेहनत और प्रतीक्षा का परिणाम था, इस शासनादेश ने प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों को चिकित्सा व्यवसाय हेतु वैधानिक अधिकारिता प्रदान कर शासकीय सहमति प्रदान की थी । इस आदेश के आने के बाद अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की भाँति यह चिकित्सा पद्धति भी अधिकार प्राप्त चिकित्सा पद्धति के रूप में खुद को स्थापित करने की दिशा में और गतिशील हो गयी है, इसके बाद 11 जनवरी का दिन आता है इस दिन को इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा के अनुयायी पूरे विश्व में मैटी जन्मोत्सव के रूप में मनाते हैं और विकास के क्या रास्ते खोजे जायें इसपर चर्चा करते हैं, जिस तरह से समाज अपने आप को उर्जित रखने के लिए व एक दूसरे से सम्बन्ध बनाये रखने के लिए त्योहारों को मनाता है ठीक उसी तरह से हम सब इलेक्ट्रो होम्योपैथ इन अवसरों को मनाते हैं, जब भी कभी कोई आयोजन होते हैं तो सम्बन्धित व्यक्ति एक दूसरे से मिलते हैं और एक दूसरे से सुःख दुःख की चर्चा करते हुए नई राह खोजते हैं व आनन्दित होते हैं इसी खोजने और पाने का नाम है उत्साह। एक पखवारे में तीन–तीन अवसर निश्चित रूप से हमारे अन्दर एक नई ऊर्जा का संचार करते हैं यह निर्विवाद रूप से सत्य है, कि एक रास्ता में रहते हुए व्यक्ति ऊब जाता है तब वह कुछ परिवर्तन की तलाश करता है कुछ नये पन की कोशिश करता है और यह परिवर्तन और नयापन उसे इन्ही अवसरों से प्राप्त होता है।

चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए समाज में घटने वाली हर छोटी बड़ी घटना मनुष्य को प्रभावित करती है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतिहास तो घटनाओं से भरा पड़ा है और यहां घटनायें भी ऐसी घटती हैं वह भी अचानक जिनके बारे में कभी कोई सोच भी नहीं सकता, कहा जाता है कि जो कुछ भी घटता है उन घटनाओं के पीछे मनुष्य का ही हाथ होता है।

इस सत्य को हम स्वीकारते हैं लेकिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ घटनायें ऐसी भी घटीं जिनका कभी किसी ने पूर्वानुमान भी नहीं लगाया था, घटनायें समाज की तारतम्य को बदल देती हैं व्यवस्थाओं में परिवर्तन ला देती हैं उत्साह को अनुत्साह में बदल देती हैं। बलवती होती आशायें एका एक चूर–चूर हो जाती हैं परन्तु मनुष्य वही होता है जो इनसब से ऊपर उठकर काम करने की राह खोजे और यह चेतना हमें अवसरों से प्राप्त होती हैं।

सरकार पर निर्भर न रहें

इलेक्ट्रो होम्योपैथी पूर्ण सफलता नहीं पा रही है इसका मुख्य कारण यह है कि हमारा अधिकांश चिकित्सक स्वयं पर निर्भर न होकर या तो संस्थाओं पर निर्भर है या फिर सरकार पर और यही कारण है कि न तो चिकित्सक अपने अन्दर आत्मविश्वास को जन्म दे पा रहा है और न ही समाज के अन्दर अपना स्थान बना पा रहा है यदि इन कारणों को दूर कर दिया जाये तो ऐसी कोई वजह नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी स्थापित न हो पाये।

जहाँ तक संस्थाओं की बात है, संस्थायें अपने ढंग से कार्य करती हैं वर्ष 2003 तक हर संस्था अपने–अपने ढंग से कार्य करती रही थी लेकिन जैसे ही हाईकोर्ट का एक आदेश आया और उस आदेश के अनुपालन में प्रदेश की सभी संस्थाओं को शासन में पंजीकरण कराना है, जैसे ही यह आदेश आया अधिकांश संस्थायें गायब हो गयीं सिर्फ एक मात्र संस्था बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ऐसी थी जिसने पंजीयन का आवेदन शासन को प्रस्तुत किया और परिणाम स्वरूप 4 जनवरी, 2012 को ऐतिहासिक आदेश प्राप्त किया। आज हम सब उस आदेश का लाभ उठा रहे हैं लेकिन जितना लाभ उठाना चाहिये उतना नहीं उठा पा रहे हैं, इसके पीछे यदि कोई कारण है तो वह है दूसरे पर निर्भरता हमारा चिकित्सक यह चाहता है कि हमारा सारा कार्य संस्था कर दे वह यह भूल जाता है कि संस्था सिर्फ आपको आपके अधिकार दिलाती है और उन अधिकारों का प्रयोग उन्हे स्वयं करना होता है।

यह वह बातें हैं जिनपर हम सब चिकित्सकों को गम्भीरता से विचार करना होगा अब जब हमें चिकित्सा करने का अधिकार प्राप्त हो गया है तो हमारा चिकित्सक चाहता है कि सरकार उनकी कोई ऐसी व्यवस्था कर दे जिससे कि उन्हें नौकरी का अवसर प्राप्त हो जाये, यह हम भी चाहते हैं कि हमारे सभी साथियों को सेवा का अवसर मिले परन्तु यह अवसर कैसे मिले ?

इसके बारे में हमनें अपने साथियों को कई बार समझाने की कोशिश भी की, कि आप अधिक से अधिक संख्या में अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करें यदि 75 जिलों से 50– 50 चिकित्सक ने भी अपने पंजीयन का आवेदन प्रस्तुत कर दिया होता तो लगभग 37 सौ चिकित्सकों की सूची शासन के पास होती और यदि शासन कोई आनाकानी करता तो इतनी बड़ी संख्या में चिकित्सकों की अवहेलना हमें स्वीकार नहीं होती लेकिन हमारे लाख प्रयासों के बाद भी हमारे चिकित्सक जागरूक नहीं हुए और वह उसी तरह के प्रैक्टिस कर रहे हैं जैसे की पहले करते आ रहे थे।

आज संगठन की बहुत आवश्यकता है संगठन के माध्यम से हम बहुत कुछ पा सकते हैं जब व्यक्ति संगठित होता है तो बड़ा से बड़ा काम आसानी से कर गुजरता है जिस प्रकार एक संगठित परिवार पर कोई बाहरी व्यक्ति प्रहार करने से घबराता है और जो बिखरे परिवार होते हैं उनके बारे में कोई कुछ भी टिप्पणी कर लेता है। ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक इतने अधिक संगठित और एकजुट हैं कि उनके विरूद्ध किसी को भी टिप्पणी करने की हिम्मत नहीं पड़ती है, जो जब जिसको चाहते हैं उसे परेशान कर लेते हैं यद्यपि परेशानी से तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति सशक्त होता है उसकी आवाज़ कोई दबा नही पाता। इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अभी सशक्त बनने के लिए बहुत आगे बढ़ना है यह बात कहने और सुनने में तो बहुत अच्छी लगती है लेकिन जब इसे कार्य के रूप में परिणित किया जाता है तभी वास्तविकता सामने आती है, आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गणना में लाखों चिकित्सक हैं लेकिन यर्थात के धरातल पर शायद यह बात कहीं पर भी टिक नहीं पाती है, लाखों न सही यदि हज़ारों चिकित्सक भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय करके जनता का विश्वास जीत लें तो हम जो भी सरकार से चाहते हैं वह अवश्य प्राप्त हो जायेगा।

वैसे तो चिकित्सा को सेवा से जोड़ा जाता है लेकिन हमारे देश में सेवाओं को भी उद्योग का रूप दे दिया गया है और इनमें काम करने वाले लोगों को एक कर्मचारी की तरह प्रयोग किया जाता है। यह मानसिकता इस तरह इस कदर हम सब पर हावी हो चुकी है कि हम इससे उबर नही पाते हैं यही कारण है कि हमारी निर्भरता बढ़ती ही जाती है, ज्यों–ज्यों समय बढ़ रहा है परिस्थितियां बदलती ही जा रही हैं पल–पल बदलती परिस्थितियों में यदि हमें जिन्दा रहना है तो हमें एक नई कार्य संस्कृति को जन्म देना ही होगा नई कार्य संस्कृति से मतलब हमारे चिकित्सकों को विधि सम्मत ढंग से और प्रदेश में चिकित्सा व्यवसाय करने हेतु प्रचलित नियमों और उपनियमों का पालन करना होगा ऐसा इसलिए करना होगा कि यही वह कारण है जिसे पूरा करने के बाद हम पूर्ण चिकित्सक के रूप में स्थापित होते हैं।

सरकार का रूख अभी भी सकारात्मक है लेकिन समय समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा जो कार्य गुज़ारी कर दी जाती और उससे जो परिणाम आते हैं वह किसी एक दो को नहीं पूरा का पूरा इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत को परेशान करके रख देता है इसलिए दूसरे पर निर्भरता छोड़कर आत्म निर्भर बनने का प्रयास करें।

अधिकार दिवस के अवसर पर मंचासीन बायें से दायें पूर्व ज़िला होम्योपैथिक अधिकारी डा0 बी0डी0 जोशी, डा0 सैयद मो0 हस्सान उप निदेशक केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद एवं डा0 एम0 एच0 इदरीसी चेयरमैन बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 – छाया गज़ट

क्या दिखाना चाहते हैं हमारे साथी !

समाज में रहने वाला हर व्यक्ति समाज के लिए कुछ न कुछ करना चाहता है, बहुत कम ही लोग ऐसे होंगे जो समाज के लिए कुछ न करते हों हर व्यक्ति का समाज के उत्थान और पतन में अपना योगदान होता है वह योगदान समाज को कितना प्रभावित करता है इसका निर्णय तो प्रभाव पड़ने के बाद ही होता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में घटनायें घटती रहती हैं जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीधे तौर पर प्रभावित होती है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का परिवार काफी बड़ा है और इस परिवार के सभी सदस्य कर्मठ और समर्पित हैं हमारा हर साथी अपनी क्षमता के साथ यह प्रयास करता है कि वह अपनी प्रिय चिकित्सा पद्धति के लिए कुछ ऐसा कर गुजरे जिससे कि चिकित्सा पद्धति के मान सम्मान में बढ़ोत्तरी हो, होना भी यही चाहिये 150 वर्ष से अधिक का समय व्यतीत हो चुका है, इतना लम्बा समय बीत जाने के बाद भी जो स्थायित्व और जो सम्मान इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मिलना चाहिये वह अभी प्राप्त नहीं हुआ, उनके कारणों पर गम्भीरता से चिन्तन करने के बाद जो कुछ दिखायी पड़ता है वह यही बताता है कि प्रयासों में कमी नहीं रही, लेकिन जो प्रयास किये गये उनमें सर्वजन हिताय की भावना का नितान्त अभाव रहा है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन कई चरणों चलाया गया और जिन हाथों में इन आन्दोलनों का नेतृत्व रहा है उनकी क्षमता पर तो कोई प्रश्नचिन्ह नहीं है परन्तु अपरिपक्वता के दर्शन अवश्य होते हैं। कहा जाता है कि उम्र के साथ व्यक्ति में सोचने समझने की सामर्थ्य बढ़ जाती है लेकिन ऐसा लगता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शायद यह क्षमता कुछ ज्यादा ही बढ़ गयी है जिस तरह से आज पूरा देश राजनीति से त्रस्त है ठीक इसी तरह का प्रभाव इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी है नेतृत्व की बहुलता के कारण आन्दोलन दिशा हीन हो रहा है जिसकी जो मर्जी होती है वह करने लगता है जिसके साथ दस पाँच लोग भी जुड़ते हैं वह अपने आप को राष्ट्रीय स्तर का नेता स्वयं को मानने लगता है और यहीं से शुरू होता है अभिमान यह अभिमान यदि पराक्रम बन जावे तो शायद आन्दोलन की दिशा बदल जावे और वर्षों से प्रतीक्षित हम सब की मनोकामना पूरी हो जावे लेकिन अब तो विडम्बना की भी पराकाष्ठा हो गयी है जिसकी जो मर्जी होती है उधर की तरफ आन्दोलन की दिशा बदल देता है। दिशा बदलती है कि नहीं यह तो समय ही बतायेगा लेकिन मस्तिष्क में परिवर्तन अवश्य आ जाता है और सोच का यह बदलाव नई-नई परिस्थितियों को जन्म देता है।

पिछले कुछ दिनों से सबकुछ ठीक चल रहा है भारत सरकार से काम करने का अधिकार प्राप्त हो जाने के बाद हमारे जो साथी अपने आप को अधिकार विहीन मानते हैं उन्होंने खुद को जिन्दा रखने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाने का आन्दोलन खड़ा कर दिया इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिलनी चाहिये यदि सरकार मान्यता देने में आनाकानी करे तो दबाव बनाने हेतु आन्दोलन भी होने चाहिये परन्तु आन्दोलन की रणनीति ऐसी हो जो सर्वग्राही हो और सरकार के सामने उसका प्रस्तुतीकरण भी सशक्त तरीके से किया जा सके।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है हम सबकी कार्य पद्धति, भारत सरकार में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता देने के लिए ***Reconization of New Medical System Bill 2005*** पहले से ही प्रस्तावित है इस बिल पर 11 वर्ष बीत जाने के बाद भी सरकार ने कोई पहल नहीं की हम सब लोगो को बैठकर इस विषय पर एक सहमति बनानी होगी तभी कोई मान्यता का रास्ता निकल सकता है पिछले दिनों पूरे देश में कुछ संस्थाओं द्वारा ऐसा वातावरण पैदा किया गया कि शायद वही कुछ ऐसे चन्द व्यक्ति हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिला सकते हैं मान्यता के नाम पर सोशल मीडिया पर तरह-तरह के प्रचार किये गये लोगों को यह समझाने का प्रयास किया गया कि जितने भी पुराने लोग वह मान्यता विरोधी हैं इनके रहते मान्यता नहीं मिल सकती हम ही मान्यता दिला सकते हैं।

इस कार्यक्रम को लोगों का समर्थन मिला, लोगों ने भरपूर सहयोग दिया, मान्यता पाने के लिए निर्धारित तय समय सीमा समाप्त हो गयी, परन्तु परिणाम क्या हुआ ?हम सबके सामने है सत्य बात तो यह है कि आन्दोलन की जो रूपरेखा बनी थी उसपर न तो किसी की सहमति थी और न ही किसी से किसी तरह की कोई राय ली गयी थी और तो और इस आन्दोलन की यह विशेषता यह रही कि यह आन्दोलन जिन लोगों के हाथ में था वह पहले खुद को सुरक्षित करना चाहते थे फिर आन्दोलन ___

फिर से सुरक्षित करने का तात्पर्य यह है कि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लड़ाई तभी लड़ सकते हैं जब हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी को ही आधार बनायें, स्वयं तो अन्य पद्धतियों में चले जायें और आन्दोलन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए करें। आनन्द तो तब आता है जब आपके आन्दोलन और आपकी बातों से प्रभावित होकर अन्य पद्धतियों के लोग आपसे जुड़ते, लेकिन इसके लिए यही वाक्य है कि काश ऐसा होता !

कार्यक्रम का संचालन करते डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई एवं ऊपर उपस्थित ऑडियन्स

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को सुगमतापूर्वक आज भी चलाया जा सकता है बशर्ते दिशा एक हो, सोच सकारात्मक हो, खुद को स्थापित करने के स्थान पर चिकित्सा पद्धति को स्थापित करने की भावना हो, ऐसा नहीं है कि हमारे मध्य ऐसी भावनायें नहीं हैं आवश्यकता है तो ऐसी भावनाओं को पुनर्जीवित करने की। कार्य ऐसे हों जो चिकित्सा पद्धति के विकास में सहायक हों ऐसे कार्य नहीं होने चाहिये जो कि चिकित्सा पद्धति को किसी संकट में डाल दें। आजकल औषधि निर्माण के माध्यम से ऐसे प्रयास जारी हैं लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं ?यह तो समझ से परे है ! परन्तु यदि इस तरह की गति- विधियां ज्यादा दिनों तक चलती रहीं तो संकट गहराने में समय नहीं लगेगा। सामान्य भाषा में इसको इस तरह से समझा जा सकता है कि जब किसी औषधि का निर्माण होता है तो उस औषधि के निर्माण विधि के लिए कुछ मानक होते हैं उन मानकों को पूरा करके ही गुणवत्तायुक्त औषधि का निर्माण हो सकता है।

आज पूरे देश में बहुत सारी कम्पनियां औषधि निर्माण के क्षेत्र में बहुत तेजी के साथ लगी हैं और अपने उत्पादन चिकित्सकों के मध्य प्रस्तुत कर रही हैं परन्तु यह कम्पनियां यह नहीं सोच रही हैं कि जिस तरह की शब्दावली का वह खुलेआम प्रयोग कर रही हैं वह न सिर्फ उनको बल्कि पूरी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कभी भी नुकसान पहुँचा सकती हैं, नुकसान इसलिए पहुँच सकता है क्योंकि पिछले दिनों कई इलेक्ट्रो होम्योपैथी की फार्माकोपिया मैदान में आ गयी हैं और इन फार्माकोपियों का बकायदा लोकार्पण भी हो रहा है और राजनीति से जुड़े व्यक्तियों को इस अपेक्षा से भेंट की जा रही है कि वह जिम्मेदार व्यक्ति उन मानक ग्रन्थों को पढ़ेंगे और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कुछ सकारात्मक उपाय सोचेंगे तथा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की राह प्रशस्त करेंगे।

यहां पर दो बातें परस्पर विरोधाभाषी हैं। पहली बात इलेक्ट्रो होम्योपैथी प्राचीन चिकित्सा पद्धति है या नवीन विज्ञान ! यह सब स्वीकारते हैं और सत्य भी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी सन् 1865 से प्रयोग में लायी जा रही है, इसकी औषधियां भी बन रही हैं, रोगियों को लाभ भी मिल रहा है, दूसरी तरफ लगातार नई-नई प्रकाशित हो रही फार्माकोपियायें इस बात को स्वीकारती हैं कि यही एक प्रमाणिक ग्रन्थ है जिसके आधार पर औषधियों का निर्माण होगा।

अब आप स्वयं निर्णय लें कि इस तरह के कदम इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कितने लाभकारी होंगे ?एक मजेदार बात तो यह है कि एक लेखक द्वारा दो-दो किताबों पर समान अधिकार से विषय विशेषज्ञता प्रदर्शित करना सन्देह को जन्म देता है। व्यक्ति एक साथ कई विषयों पर विशेषज्ञता रख सकता है लेकिन कार्य एक ही क्षेत्र पर ईमानदारी से कर सकता है।

एक खिलाड़ी फुटबाल के साथ साथ क्रिकेट को भी जान सकता है लेकिन अपनी क्षमता किसी एक में ही प्रदर्शित कर सकता है इन मानक ग्रन्थों का बनना और छपना अच्छी बात है लेकिन जिस तरह से उसका प्रचार किया जा रहा है उसके कभी सार्थक दूरगामी परिणाम नहीं हो सकते ! सोशल मीडिया के माध्यम से हम अपने आपको चमका तो सकते हैं लेकिन कुछ समय बाद फेसबुक और व्हाट्सएप के बजाय जब आज के कार्यों का आपसे लेखा जोखा मांगेंगे तो उत्तर क्या होगा ?यह तो समय ही बतायेगा। इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां मानकीकृत हैं जर्मन होम्योपैथी फार्माकोपिया में इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाहित है और उसी के आधार पर यह औषधियां तब तक बननी चाहिये जब तक कि सरकारों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने का कार्य नहीं किया जाता है।

नये शोध, नई सोच, हर समय बनी रहनी चाहिये लेकिन वह सोच पुराने पर ही आधारित होती है यदि हम पुराने को बिल्कुल नकार देंगे तो प्राचीनता समाप्त हो जायेगी और वर्षों से हमारे कार्य की दावेदारी पर भी विराम लग जायेगा।

अधिकार दिवस के अवसर पर मंच से सम्बोधित करते हुये डा0 वी0 डी0 जोशी पूर्व जिला होम्योपैथिक अधिकारी एवं मंच पर क्रमशः बांयें से दायें डा0 आर0 के कपूर, डा0 सैयद हस्सान, उप निदेशक केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद, एवं डा0 एम0 एच0 इदरीसी चेयरमैन बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 — छाया गज़ट

अधिकार दिवस के अवसर पर माईक पर डा0 आर0 के कपूर — छाया गज़ट

नयी सुबह का हम सबको इन्तजार है

इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हर व्यक्ति को नवीनता की तलाश है और नवीनता कैसे मिले ?इसके लिए चिन्तित तो जरूर हैं लेकिन प्रयासशील बिल्कुल नहीं है।

अगर पूरे प्रदेश का इलेक्ट्रो होम्योपैथ पूरे मनोयोग से प्रयास कर ले तो नई सुबह होने में ज़रा भी देर नहीं लगेगी धुंध बहुत थी लेकिन धीरे–धीरे वह वह धुंध छट जायेगी ऐसा विश्वास है और विश्वास निश्चित रूप से एक दिन रंग दिखायेगा। हम में से हर व्यक्ति जब आपस में परस्पर बात करते हैं तो यही चर्चा करते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ नया हुआ क्या ?नये की तमन्ना रखना, नये के बारे में विचार करना दो अलग–अलग बातें हैं कामनायें तो हर एक व्यक्ति रखता है परन्तु कामनायें उसी की पूरी होती हैं जो वस्तुतः प्रयास करता है वरना कामनायें मात्र कामनायें रह जाती हैं और जब कामनायें पूरी नहीं होती हैं तो व्यक्ति के मन में निराशा का भाव जन्म ले लेता है व्यक्ति निराश हो जाता है और इसी हताशा में वह जाने क्या क्या कहनें लगता है ! परन्तु वह उस बिन्दु पर ज़रा भी विचार नहीं करता है कि वह कौन सी परिस्थितियां हैं जिनके कारण कामनायें पूरी नहीं हो पा रही हैं। यदि व्यक्ति इन सब बिन्दुओं पर वास्तविक चिन्तन कर ले तो न तो निराशा होगी और न ही हताशा। इन दोनों ही बातों के आने से व्यक्ति की क्रियाशीलता प्रभावित होती है समय रहते यदि सारे कार्य कर लिये जायें तो परिणाम सापेक्ष ही आते हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रायः ऐसा देखा जाता है कि यहाँ पर अंतिम क्षणों का इन्तेज़ार किया जाता है और जब अवधि समाप्त होने को होती है तब इतनी तेज़ी दिखाई जाती है कि सारी सक्रियता उन्हीं क्षणों दिखाई देने लगती है, ऐसे कार्यों में प्रायः त्रुटि होने की सम्भावनायें बनी रहती हैं, नये कार्य का सूत्रपात हो इसके लिये सम्भावनाओं का बने रहना बहुत आवश्यक होता है, यदि सम्भावनायें ही नहीं रहेंगी तब किसी नई व्यवस्था को जन्म कैसे मिलेगा ?एक बार फिर हम आपको अवगत करा दें कि पूरे प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने के लिये इतना अच्छा वातावरण है जो कि आसानी से नहीं मिलता है। अब यदि यह वातावरण उपलब्ध हो ही गया है तो हमें इसका भरपूर उपयोग करना होगा, अब जबतक नई सरकार का गठन नहीं होता है तबतक हम सभी इतना ज़्यादा कार्य करें और उन सबका पूर्ण विवरण एकत्रित कर नव गठित सरकार के समक्ष प्रस्तुत करें जिससे कि जिस नई सुबह की हमें प्रतीक्षा है हमारी वह प्रतीक्षा टूटे और हम सब को अपना अभीष्ठ प्राप्त हो सके परन्तु अभीष्ठ की प्राप्ति के लिये कर्म तो हमें ही करने होंगे ।

अधिकार दिवस के अवसर पर मंच से सम्बोधित करते हुये डा० प्रमोद कुमार मौर्या प्राचार्य बी० एम० ई० एच० इन्सटीट्यूट जौनपुर मंच पर क्रमशः बांये से दाये डा० आर० के कपूर, डा० वी० डी० जोशी पूर्व जिला होम्योपैथिक अधिकारी एवं डा० एम० एच० इदरीसी चेयरमैन बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 — छाया गज़ट

डा0 काउण्ट सीज़र मैटी के 208 वें जन्म दिवस के अवसर पर पर बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी प्रशासनिक कार्यालय में महात्मा मैटी को माल्यार्पण करते हुये। छाया गज़ट

4 जनवरी, 2017 को अधिकार दिवस के अवसर पर जय शंकर प्रसाद हॉल, लखनऊ में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के चिकित्सकगण

मैटी जन्मोत्सव के अवसर पर बोर्ड के प्रशासनिक कार्यालय में पास्टर विक्टर खोजी प्रार्थना कराते हुये। छाया गज़ट

अधिकार दिवस पर बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0
द्वारा आयोजित
208 वाँ मैटी जन्मोत्सव
दिनांक – 11 जनवरी 2017
बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक
मेडिसिन, उत्तर प्रदेश
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक
केन्द्र
127/204 "एस" जूही
कानपुर–208014

11 जनवरी के महत्वपूर्ण छाया चित्र

11 जनवरी के महत्वपूर्ण छाया चित्र

अधिकार दिवस के अवसर पर बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 के चेयरमैन द्वारा रजिस्ट्रेशन नम्बर का प्रमाणपत्र प्राप्त करते श्री सर्वेश कुमार यादव रायबरेली छाया–गज़ट

लखनऊ में अधिकार दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि डा0 सैयद मो0 हस्सान उप निदेशक केन्द्रीस यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद से रजिस्ट्रेशन नम्बर का प्रमाणपत्र प्राप्त करते श्री राम लखन रायबरेली छाया–गज़ट

बोर्ड के अधिकार दिवस कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि डा0 बी0डी0 जोशी पूर्व ज़िला होम्योपैथिक अधिकारी (डी0एच0ओ0) से रजिस्ट्रेशन नम्बर का प्रमाणपत्र प्राप्त करते आलोक कुमार मिश्रा रायबरेली छाया–गज़ट

ऑडियन्स से खचसखच भरा हुआ हॉल छाया–गज़ट

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 द्वारा आयोजित अधिकार दिवस कार्यक्रम में भाग लेने आये हुये चिकित्सकगण। छाया–गज़ट

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 द्वारा आयोजित अधिकार दिवस कार्यक्रम में मंच से सम्बोधित करते हुये उप निदेशक केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद डा0 सैयद मो0 हस्सान छाया–गज़ट

अधिकार दिवस कार्यक्रम में मंच से सम्बोधित करते हुये डा0 प्रमोद कुमार मौर्या छाया–गज़ट

बोर्ड के अधिकार दिवस कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि डा0 आर0के0 कपूर द्वारा रजिस्ट्रेशन नवीनीकरण नम्बर का प्रमाणपत्र प्राप्त करते दिनेश कुमार तिवारी रायबरेली छाया–गज़ट